MAINS MATRIX- Integrate Your Knowledge, Ace the Exam

विषय सूची

1.कर्नाटक के ग्रामीणों ने वन कर्मियों को बाघ के जाल में बंद किया
2.दुर्लभ मृदा तत्वों के बाजार में चीन का वर्चस्व
3.नगर निगम कर्मचारियों के लिए जाति-नौकरी के संबंध को तोड़ना
4.भारत के लिए सबक: केरल तीव्र शहरीकरण से कैसे निपट रहा है
5.राज्यपालों को सच्चे मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में कार्य करना चाहिए: सीजेआई गवई

1.कर्नाटक के ग्रामीणों ने वन कर्मियों को बाघ के जाल में बंद किया

पाठ्यक्रम अवधारणा	मामले में अनुप्रयोग
नीतिशास्त्र और मानवीय अंतराफलक	ग्रामीणों की कार्रवाई, जो डर और हताशा से प्रेरित थी, मानव नैतिकता के सार को चुनौती देती है। हालाँकि उनका डर वैध है, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया - व्यक्तियों को अवैध रूप से हिरासत में लेना - साध्य (परिणाम) द्वारा साधन (तरीके) के औचित्य पर सवाल खड़े करती है।
दृष्टिकोण (Attitude)	यह घटना वन अधिकारियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और व्यवस्था में अविश्वास को प्रकट करती है। यह अधिकारियों के दृष्टिकोण को भी दर्शाती है - ग्रामीणों द्वारा उदासीन या अक्षम समझे जाने के कारण स्थिति और बिगड़ गई।
योग्यता (Aptitude)	वन विभाग की प्रतिक्रिया (केवल एक पिंजरा लगाना) समस्या-समाधान की कमी के रूप में देखी जा सकती है। एक अधिक उपयुक्त दृष्टिकोण में व्यापक ढंग से छानबीन, संचार और आश्वासन शामिल होना चाहिए था।
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)	दोनों पक्षों पर एक गंभीर विफलता। ग्रामीण: अपनी भावनाओं को प्रबंधित किए बिना डर और क्रोध से कार्य किया। अधिकारी: संभावित रूप से ग्रामीणों की घबराहट को समझने और अपने कार्यों एवं बाधाओं को प्रभावी ढंग से बताने में विफल रहे।
राजनीतिक जवाबदेही	कार्यकर्ताओं की चेतावनी कि ऐसी कार्रवाइयाँ "राजनीतिक नेताओं द्वारा प्रोत्साहित की जाती हैं", सीधे राजनीतिक हस्तक्षेप की ओर इशारा करती है। यह जनसमर्थन हासिल करने के लिए भीड़ की कार्रवाई को वैध ठहराने की राजनीतिक हस्तक्षेप की क्लासिक समस्या से मेल खाता है, जो प्रशासनिक मनोबल और कानून के शासन को कमजोर करता है।

पाठ्यक्रम अवधारणा	मामले में अनुप्रयोग
भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ	हालाँकि सीधे तौर पर भ्रष्टाचार के बारे में नहीं है, लेकिन ग्रामीणों की "असिंचरे प्रयासों" की धारणा एक व्यापक विश्वास की कमी से उपजी हो सकती है, जो अक्सर अन्य सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार या उदासीनता के अनुभवों से बढ़ती है।

3. हितधारक और उनके नैतिक दुविधाएँ

- **ग्रामीण:**
  - **दुविधा:** सुरक्षा का अधिकार बनाम कानून का पालन करने का कर्तव्य।
  - **कमी:** उन्होंने एक वास्तविक शिकायत को दूर करने के लिए एक अवैध और हिंसक तरीका चुना, जिससे उसी व्यवस्था को कमजोर किया जो उनकी रक्षा के लिए बनी है।
- **मोर्चे पर तैनात वन कर्मचारी:**
  - **दुविधा:** प्रक्रियाओं का पालन करने का कर्तव्य (जो धीमी हो सकती हैं) बनाम सार्वजनिक खतरे को तुरंत दूर करने का कर्तव्य।
  - **कमी:** सक्रिय और ईमानदार प्रयासों की कथित कमी (जैसे, व्यापक तलाशी अभियान न होना) ने जनता के विश्वास को कमजोर किया। वे उस व्यवस्था के शिकार बन गए जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी:**
  - **दुविधा:** अधिकार बनाए रखने के लिए ग्रामीणों के खिलाफ सख्त कार्रवाई (मामला दर्ज करना) बनाम विश्वास फिर से बनाने के लिए जनता के गुस्से के मूल कारण को दूर करना।
  - **आवश्यक कार्रवाई:** उन्हें अपने कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और साथ ही मानव-वन्यजीव संघर्ष के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (SOPs) की समीक्षा करनी चाहिए ताकि उन्हें अधिक उत्तरदायी बनाया जा सके।
- **राजनीतिक नेता:**
  - **नैतिक विफलता:** यदि कार्यकर्ताओं के दावे सच हैं, तो भीड़ की कार्रवाई के लिए किसी भी तरह का राजनीतिक समर्थन एक गंभीर नैतिक उल्लंघन है। उनका कर्तव्य तनाव कम करना और संस्थाओं को मजबूत करना है, न कि राजनीतिक फायदे के लिए उन्हें कमजोर करना।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

4. आगे का रास्ता: एक नैतिक दृष्टिकोण

1. **तत्काल और आनुपातिक कानूनी कार्रवाई:** जहाँ कानून के शासन को बनाए रखने और लोक सेवकों की रक्षा के लिए एक मामला दर्ज किया जाना चाहिए, वहीं प्रतिक्रिया आनुपातिक होनी चाहिए और प्रतिशोधी नहीं। लक्ष्य निवारण होना चाहिए, अलगाव नहीं।
2. **पारदर्शी संचार और संवाद:** वन विभाग को गाँव के साथ संवाद शुरू करना चाहिए। अधिकारियों को एक विशेष बाघ को पकड़ने की चुनौतियों, शामिल प्रोटोकॉल और मनुष्यों व जानवर दोनों के लिए जोखिमों को पारदर्शिता से समझाना चाहिए।

3. **मानक संचालन प्रक्रियाओं (SOPs) की समीक्षा:** यह घटना एक विफल प्रणाली का लक्षण है। विभाग को मानव-वन्यजीव संघर्ष के लिए अपने SOPs की तत्काल समीक्षा करनी चाहिए ताकि उन्हें अधिक तेज, उत्तरदायी और प्रभावी ढंग से जनता तक पहुँचाया जा सके।
4. **क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए सहानुभूति और प्रशिक्षण:** फील्ड स्टाफ को न केवल तकनीकी कौशल बल्कि संचार, सार्वजनिक सहभागिता और सहानुभूति जैसे सौम्य कौशल (soft skills) में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि सार्वजनिक भय का प्रबंधन किया जा सके और विश्वास बनाया जा सके।
5. **राजनीतिक जिम्मेदारी:** राजनीतिक नेताओं को अविवेकपूर्ण बयानों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। उनकी भूमिका जनता और प्रशासन के बीच की खाई को पाटने की होनी चाहिए, न कि बढ़ाने की।

2.दुर्लभ मृदा तत्वों के बाजार में चीन का वर्चस्व

1. मुख्य घटना

• चीन के उद्योग और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने दुर्लभ मृदा तत्वों (Rare Earth Elements - REEs) की खनन और प्रसंस्करण पर नियंत्रण कड़ा करने के लिए अंतरिम उपाय पेश किए हैं।
• यह बीजिंग की खनन, निर्यात और शोधन पर केंद्रीकृत निगरानी स्थापित करने के व्यापक प्रयासों का एक हिस्सा है।

2. दुर्लभ मृदा तत्व (REEs) क्या हैं?

• **परिभाषा:** आधुनिक प्रौद्योगिकी के लिए महत्वपूर्ण 17 धातुओं का एक समूह।
• **वास्तव में दुर्लभ नहीं:** यह नाम गलत है; वैश्विक स्तर पर ये विशेष रूप से दुर्लभ नहीं हैं।

वर्गीकरण:

1. **हल्के REEs (LREEs):** लैंथनम, सेरियम, प्रासियोडिमियम, नियोडिमियम, सैमेरियम, यूरोपियम।
2. **भारी REEs (HREEs):** गैडोलिनियम, टर्बियम, डिस्प्रोसियम, होल्मियम, अर्बियम, थुलियम, यटरबियम, लुटेटियम, स्कैंडियम, यिट्रियम।

अनुप्रयोग:

1. **स्वच्छ ऊर्जा:** इलेक्ट्रिक वाहन, पवन टर्बाइन।
2. **रक्षा:** विभिन्न उन्नत अनुप्रयोग।
3. **उच्च-तकनीकी उपभोक्ता सामान:** स्मार्टफोन, हार्ड ड्राइव।
4. **औद्योगिक:** सिरेमिक, फॉस्फोरस, स्टील, ऑप्टिकल ग्लास, फाइबर, एयरोस्पेस।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

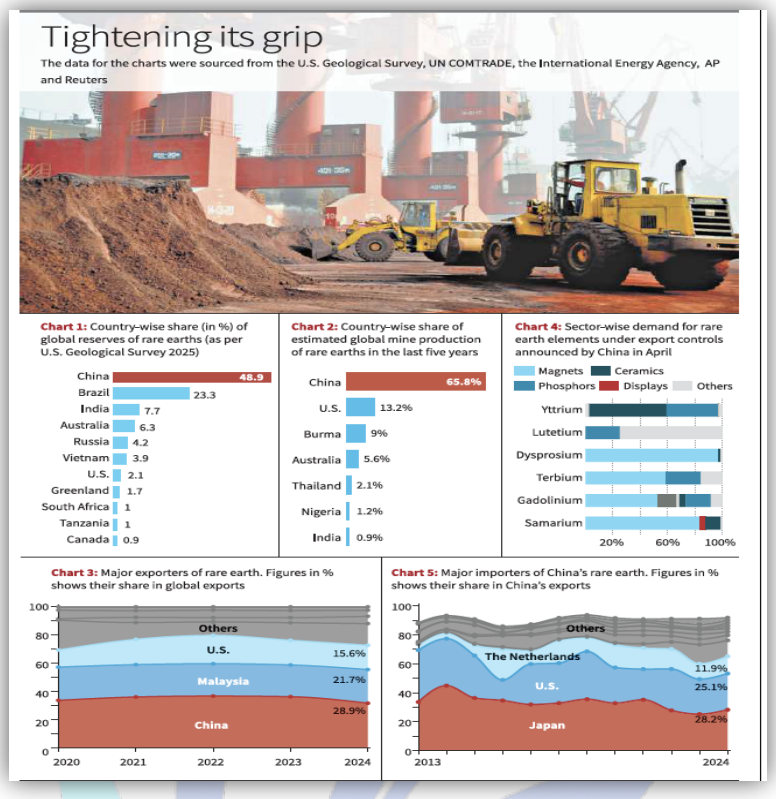

चीन का वैश्विक वर्चस्व (आंकड़ा-आधारित)

चीन की अगुवाई केवल भंडार पर आधारित नहीं है, बल्कि यह पूरे मूल्य श्रृंखला पर उसके नियंत्रण पर आधारित है।

पहलू	**माप**	**स्रोत**
वैश्विक भंडार	43.9% (वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा हिस्सा)	U.S. Geological Survey 2025
वैश्विक उत्पादन (5-वर्ष औसत)	63.8% (सबसे बड़ा उत्पादक)	-
वैश्विक शोधन क्षमता	~92%	International Energy Agency (IEA)
वैश्विक निर्यात में हिस्सेदारी	28.9% (सबसे बड़ा निर्यातक)	-

चीन की हालिया रणनीतिक कार्रवाइयाँ

- **अप्रैल 2024:** सात विशिष्ट REEs पर निर्यात प्रतिबंध लगाए।
- **लक्षित तत्व:** वे तत्व जो NdFeB मैग्नेट (स्वच्छ ऊर्जा के लिए), सिरेमिक, फॉस्फोर, डिस्प्ले और एयरोस्पेस के लिए महत्वपूर्ण हैं।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

• **दिसंबर 2023:** REE प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया।
• **मौजूदा उपाय:** REE निष्कर्षण और पृथक्करण के लिए उपकरणों और तरीकों के निर्यात पर पहले से ही प्रतिबंध लगा दिया गया था।
• **नए अंतरिम उपाय:** कंपनियों के लिए सरकार द्वारा निर्धारित कोटा के भीतर काम करना और REEs में व्यापार करने के लिए अनुमोदन प्राप्त करना अनिवार्य है।

5. चीन के एकाधिकार को मजबूत करने वाले कारक

• **अनुसंधान नेतृत्व:** REEs पर प्रकाशित सभी शोध पत्रों में लगभग 30% योगदान देता है (अमेरिका और जापान ≤10%, भारत ~6%)।
• **बड़े निवेश:** 2022 से खनिज अन्वेषण के लिए प्रति वर्ष लगभग 14 बिलियन डॉलर का आवंटन किया है - पिछले दशक में सबसे अधिक 3-वर्षीय निवेश अवधि (IEA)।

6. प्रमुख आयातकों पर प्रभाव (विशेष रूप से अमेरिका)

• **चार्ट 5:** चीन के REEs के प्रमुख आयातक (चीन के निर्यात में हिस्सेदारी)
* **जापान:** 26.2%
* **अमेरिका:** 25.1%
* **नीदरलैंड:** 11.9%
* **अन्य:** 36.8%

• **अमेरिकी निर्भरता:** 2021 के बाद से, अमेरिका के दुर्लभ मृदा तत्वों के आयात का 75% से अधिक चीन से आया है, जो इसे चीनी निर्यात नीतियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाता है।

7. मुख्य निष्कर्ष

चीन का वर्चस्व एक बहुआयामी रणनीति का परिणाम है: संसाधनों पर नियंत्रण, शोधन मूल्य श्रृंखला पर पूर्ण वर्चस्व, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर प्रतिबंध, अनुसंधान में नेतृत्व और निरंतर उच्च निवेश। यह इसे व्यापार और कूटनीतिक वार्ताओं में दुर्लभ मृदा तत्वों को एक शक्तिशाली भू-रणनीतिक और आर्थिक उपकरण के रूप में उपयोग करने की अनुमति देता है।

इसका उपयोग कैसे करें

1. सामान्य अध्ययन पेपर III (जीएस-III) - सबसे प्रत्यक्ष प्रासंगिकता

यह सबसे स्पष्ट और उच्च-प्रभाव वाला स्थान है जहाँ इस जानकारी का उपयोग किया जा सकता है।

क) अर्थशास्त्र: भारतीय अर्थव्यवस्था और नियोजन, संसाधनों का जुटान, विकास, वृद्धि से संबंधित मुद्दे।

- **अवधारणा:** संसाधन जुटाना, महत्वपूर्ण खनिज, आत्मनिर्भरता।
- **उपयोग:** एक राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज रणनीति की आवश्यकता के तर्क के लिए डेटा का उपयोग करें।
    - **उदाहरण:** "वैश्विक भंडार का 7.7% (यूएसजीएस 2025 के अनुसार) होने के बावजूद, भारत वैश्विक दुर्लभ मृदा उत्पादन में केवल 0.8% का योगदान देता है। यह संसाधन जुटाने और मूल्यवर्धन में एक गंभीर अंतर को उजागर करता है। विदेशों में खनिज परिसंपत्तियों को सुरक्षित करने और घरेलू खनन को बढ़ावा देने के लिए खनिज बिदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL) जैसी पहलें आपूर्ति श्रृंखला के एकाधिकार से अर्थव्यवस्था को जोखिम मुक्त करने की दिशा में सही कदम हैं, जैसा कि चीन द्वारा दुर्लभ मृदा तत्वों पर हालिया निर्यात नियंत्रणों से exemplified है।"

ख) सुरक्षा: आंतरिक सुरक्षा को चुनौतियाँ (सीमावर्ती क्षेत्रों के पहलू); विभिन्न सुरक्षा बल और एजेंसियाँ।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **अवधारणा:** आर्थिक युद्ध, सुरक्षा के लिए गैर-पारंपरिक खतरे।
- **उपयोग:** दुर्लभ मृदा वर्चस्व को भू-आर्थिक दबाव के उपकरण के रूप में प्रस्तुत करें।
    - **उदाहरण:** "सुरक्षा चुनौतियाँ अब सीमाओं तक सीमित नहीं हैं। जैसा कि 2024 के चीन-अमेरिका व्यापार तनाव में देखा गया, जहाँ बीजिंग ने रक्षा प्रौद्योगिकी जैसे सटीक-निर्देशित मिसाइलों और रडार सिस्टम के लिए महत्वपूर्ण दुर्लभ मृदा निर्यात पर प्रतिबंध लगाया, आपूर्ति श्रृंखला पर नियंत्रण दबाव का एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है। भारत का रक्षा आधुनिकीकरण ऐसे व्यवधानों के प्रति संवेदनशील है, जिससे महत्वपूर्ण खनिजों में रणनीतिक स्वायत्तता एक राष्ट्रीय सुरक्षा अनिवार्यता बन जाती है।"

ग) प्रौद्योगिकी: प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण।

- **अवधारणा:** नई प्रौद्योगिकी का विकास।
- **उपयोग:** सामग्री विज्ञान और तकनीकी स्वदेशीकरण के बीच की कड़ी पर प्रकाश डालें।
    - **उदाहरण:** "इलेक्ट्रिक वाहनों से लेकर उपग्रह प्रणालियों तक, प्रौद्योगिकी का सच्चा स्वदेशीकरण कच्चे माल की सुरक्षा के बिना असंभव है। दुर्लभ मृदा शोधन क्षमता पर चीन का 92% नियंत्रण दर्शाता है कि केवल विनिर्माण पर्याप्त नहीं है। भारत को रणनीतिक कमजोरियों से बचने के लिए खनन से लेकर प्रसंस्करण तक पूरे मूल्य श्रृंखला में निवेश करना चाहिए।"

घ) पर्यावरण: संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण।

- **अवधारणा:** सतत विकास, स्वच्छ ऊर्जा।
- **उपयोग:** खनन की पर्यावरणीय लागत और स्थायी प्रथाओं की आवश्यकता पर चर्चा करें।
    - **उदाहरण:** "ईवी और पवन टर्बाइनों के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा के लिए वैश्विक धक्का विडंबना से दुर्लभ मृदा तत्वों पर निर्भर है, जिनका खनन और प्रसंस्करण अक्सर अत्यधिक प्रदूषणकारी होता है। अपने स्वयं के भंडार विकसित करते हुए, भारत को स्वच्छ निष्कर्षण और पुनर्चक्रण प्रौद्योगिकियों में निवेश करके और उन्हें अनिवार्य करके छलांग लगानी चाहिए, एक पर्यावरणीय चुनौती को स्थायी खनिज प्रबंधन में नेतृत्व के अवसर में बदलना चाहिए।"

2. सामान्य अध्ययन पेपर II (जीएस-II)

क) अंतर्राष्ट्रीय संबंध: भारत और उसके पड़ोसी- संबंध। द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और समझौते जिनमें भारत शामिल है और/या जो भारत के हितों को प्रभावित करते हैं।

- **अवधारणा:** भू-राजनीति, आपूर्ति श्रृंखला कूटनीति, क्वाड, खनिज सुरक्षा साझेदारी (MSP)।
- **उपयोग:** चीनी वर्चस्व का मुकाबला करने के लिए भारत की कूटनीतिक चालों पर चर्चा करने के लिए इसका उपयोग करें।
    - **उदाहरण:** "दुर्लभ मृदा निर्यात को भू-राजनीतिक उपकरण के रूप में चीन का उपयोग, जैसा कि उसके 2023-24 प्रतिबंधों में देखा गया, ने वैकल्पिक आपूर्ति श्रृंखला गठबंधनों के गठन को उत्प्रेरित किया है। भारत खनिज सुरक्षा साझेदारी (MSP) में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है और ऑस्ट्रेलिया (जिसके पास बड़े भंडार हैं) और जापान (एक तकनीकी नेता) जैसे क्वाड भागीदारों के साथ सहयोग कर रहा है ताकि एक चीन-मुक्त आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण किया जा सके। यह भू-राजनीति द्वारा आर्थिक साझेदारी को आकार देने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।"

3. सामान्य अध्ययन पेपर I (जीएस-I)

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS OUR COMMITMENT"

क) भूगोल: दुनिया भर में प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों का वितरण।

- **अवधारणा:** संसाधनों का वैश्विक वितरण।
- **उपयोग:** यह संसाधन वितरण पर प्रश्नों के लिए एक आदर्श, डेटा-संचयित उदाहरण है।
    - **उदाहरण:** "दुर्लभ मृदा तत्वों का वैश्विक वितरण अत्यधिक असमान है। यूएसजीएस 2025 के अनुसार, चीन (43.9%), ब्राजील (23.3%), और भारत (7.7%) के पास सबसे बड़े भंडार हैं। हालाँकि, उत्पादन पर चीन (63.8%) का जबरदस्त वर्चस्व है, यह दर्शाता है कि भूवैज्ञानिक उपलब्धता केवल एक कारक है; तकनीकी क्षमता और रणनीतिक नीति संसाधन वर्चस्व के **बड़े** (अधिक बड़े) निर्धारक हैं।"

3.नागरिक कर्मचारियों के लिए जाति-रोज़गार के बंधन को तोड़ना

1. मूल मुद्दा

लेख इस बात की जांच करता है कि क्या सरकारी कार्रवाई, विशेष रूप से नौकरियों का स्थायीकरण (रेगुलराइजेशन), चेन्नई और बेंगलुरु में सफाई कर्मचारियों (जो अक्सर दलित समुदायों से होते हैं) के मामले का उपयोग करते हुए, जाति और पेशे के ऐतिहासिक संबंध को तोड़ सकती है।

यह दो दृष्टिकोणों के बीच तुलना करता है:

- **समस्या:** निजीकरण/अनुबंधीकरण शोषण को बढ़ाता है (कम मजदूरी, नौकरी की सुरक्षा नहीं, कोई लाभ नहीं), जिससे जाति-आधारित पेशा मजबूत होता है।
- **समाधान:** नौकरी का स्थायीकरण (जैसा कि बेंगलुरु में किया गया) न्यूनतम मजदूरी, सुरक्षा और लाभ प्रदान करता है। यह श्रमिकों को सशक्त बनाता है, उन्हें मोलभाव की शक्ति देता है, और उनके बच्चों की शिक्षा में निवेश करने में सक्षम बनाकर सामाजिक गतिशीलता को सक्षम करता है, जिससे पीढ़ीगत जाति-रोज़गार के बंधन को तोड़ने का एक ठोस रास्ता प्रदान होता है।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम में उपयोग कैसे करें

यह केस स्टडी जीएस- I, जीएस- II और जीएस- IV के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

1. जीएस- I (समाज):

- **विषय:** भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएं, जाति व्यवस्था।
- **उपयोग:** इसका उपयोग एक समकालीन उदाहरण के रूप में करें कि कैसे आधुनिक भारत में जाति व्यवसाय को निर्धारित करना जारी रखती है। तर्क दें कि आर्थिक नीतियां (जैसे निजीकरण) अनजाने में सामाजिक पदानुक्रमों को मजबूत कर सकती हैं, जबकि सक्रिय राज्य नीति (स्थायीकरण) सामाजिक सुधार और जाति के बंधनों को तोड़ने का एक उपकरण हो सकती है।

2. जीएस- II (शासन और सामाजिक न्याय):

- **विषय:** कमजोर वर्गों के लिए कल्याणकारी योजनाएं, सामाजिक जवाबदेही के तंत्र।
- **उपयोग:** समावेशी विकास और कमजोर समुदायों की सुरक्षा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बेंगलुरु मॉडल का उपयोग करें। इस बात पर प्रकाश डालें कि गरिमा और अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और स्थायीकरण, निजी ठेकेदारों को आउटसोर्स करने की तुलना में अधिक प्रभावी शासन उपकरण हैं। प्रभावी शासन का मूल्यांकन करने के लिए तमिलनाडु और कर्नाटक के दृष्टिकोणों के बीच तुलना करें।

3. जीएस- IV (नैतिकता):

- **विषय:** शासन में नैतिकता, संवेदनशील शासन।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **उपयोग:** नीतिगत विकल्पों के नैतिक निहितार्थों को उजागर करने के लिए इस मामले का उपयोग करें।
    - सुरक्षा उपायों के बिना, आवश्यक सेवाओं का निजीकरण अनैतिक हो सकता है क्योंकि यह ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहे समुदायों का शोषण करता है।
    - स्थायीकरण, समानता, करुणा और श्रम की गरिमा जैसे नैतिक शासन के सिद्धांतों के साथ संरेखित होता है। यह दर्शाता है कि नीतियां सामाजिक न्याय और नैतिक जिम्मेदारी के उपकरण कैसे हो सकती हैं।

4.भारत के लिए सबक: केरल तीव्र शहरीकरण से कैसे निपट रहा है

केरल शहरी नीति आयोग (केयूपीसी) रिपोर्ट

1. संदर्भ: केयूपीसी की आवश्यकता क्यों थी

- **अनोखा शहरी परिदृश्य:** केरल में एक "टर्बन" (शहर-गाँव continuüm) परिदृश्य है जहाँ शहर, कस्बे और गाँव गहराई से जुड़े हुए हैं।
- **तेजी से शहरीकरण:** राष्ट्रीय औसत से तेजी से शहरीकरण, अनुमानित 2050 तक 80% शहरी आबादी।
- **जलवायु संवेदनशीलताएँ:** बाढ़ (एर्नाकुलम), भूस्खलन, तटीय कटाव और समुद्र के स्तर में वृद्धि सहित गहन जलवायु तनाव का सामना।
- **शासन अंतर:** मौजूदा शहरी नियोजन प्रतिक्रियाशील और केंद्रीकृत था, इन तेजी से बदलावों के साथ तालमेल रखने में असमर्थ।

2. केरल शहरी नीति आयोग (केयूपीसी) क्या है?

- राज्य-स्तरीय पहला शहरी आयोग।
- **जनादेश:** दिसंबर 2023 में केरल के लिए 25-वर्षीय शहरी रोडमैप तैयार करने के लिए बनाया गया।
- **विजन:** शहरों को केवल कंक्रीट की समस्याएं नहीं, बल्कि जैविक, जलवायु-जागरूक पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में देखना।
- **आउटपुट:** मार्च 2025 में प्रस्तुत 2,359-पृष्ठों की अंतिम रिपोर्ट, जो 10 विषयगत स्तंभों के आसपास संरचित है।

3. केयूपीसी की प्रमुख नवीन सिफारिशें

रिपोर्ट चार स्तंभों पर आधारित एक संरचनात्मक reset का वादा करती है: एक डेटा क्रांति, शासन पुनर्गठन, पहचान पुनरुद्धार, और वित्त सशक्तिकरण।

विषय	प्रमुख सिफारिशें
जलवायु लचीलापन	• **जलवायु-जागरूक ज़ोनिंग:** शहरी नियोजन को खतरा मानचित्रण (भूस्खलन, बाढ़) को एकीकृत करना होगा। • **पैरामीट्रिक जलवायु बीमा:** आपदा-प्रवण क्षेत्रों के लिए पूर्व-अनुमोदित भुगतान।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

विषय	प्रमुख सिफारिशें
	• **ग्रीन फीस:** शहरी लचीलापन को निधि देने के लिए पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में परियोजनाओं पर पर्यावरणीय लेवी।
डेटा और प्रौद्योगिकी	• **डिजिटल डेटा वेधशाला:** LIDAR, उपग्रह, ज्वार मापक आदि से रीयल-टाइम डेटा एकत्र करने के लिए केरल इंस्टीट्यूट ऑफ लोकल एडमिनिस्ट्रेशन में एक केंद्रीय नर्व सेंटर। • **ज्ञानशेयर कार्यक्रम:** शासन में युवा tech talent की भर्ती और तैनाती।
वित्त और अर्थव्यवस्था	• **नगरपालिका बॉन्ड:** बड़े शहरों (तिरुवनंतपुरम, कोच्चि, कोझिकोड) को बॉन्ड जारी करने होंगे। • **पूल्ड बॉन्ड:** छोटे शहरों के लिए। • **स्थान-आधारित आर्थिक पुनरुद्धार:** विशेष आर्थिक क्षेत्र विकसित करना (जैसे, फिनटेक हब के रूप में त्रिशूर-कोच्चि, साहित्य के शहर के रूप में कोझिकोड)।
शासन में बड़ा बदलाव	• **सिटी कैबिनेट:** गतिशील निर्णय लेने के लिए नौकरशाही जड़ता को मेयर के नेतृत्व वाली कैबिनेट से बदलना। • **विशेषज्ञ सेल:** जलवायु, कचरा, गतिशीलता और कानून के लिए समर्पित नगरपालिका कैडर बनाना।
सामाजिक और सांस्कृतिक	• **सामान्य संसाधनों को पुनर्जीवित करना:** आर्द्रभूमि की सुरक्षा, जलमार्गों को पुनः सक्रिय करना, विरासत क्षेत्रों का संरक्षण। • **सिटी हेल्थ काउंसिल:** प्रवासियों, छात्रों और gig workers के लिए।

4. केयूपीसी रिपोर्ट को क्या खास बनाता है?

- **जमीनी-स्तर और डेटा-संचालित:** यह स्थानीय कथनों (जैसे, मछुआरों का ज्ञान, विक्रेताओं के अनुभव) को तकनीकी डेटा (LIDAR, उपग्रह इमेजरी) के साथ जोड़कर एक "जीवित बुद्धिमत्ता" प्रणाली बनाती है।
- **एकीकृत जलवायु कार्रवाई:** जलवायु लचीलापन हर स्तंभ में एम्बेडेड है, न कि इसे एक अलग add-on के रूप में माना गया है।
- **उप-राष्ट्रीय फोकस:** किसी राज्य की विशिष्ट वास्तविकताओं के अनुरूप पहला आयोग, न कि एक पुनर्नवीनीकरण राष्ट्रीय ढांचा।
- **समग्र दृष्टिकोण:** यह नियोजन, वित्त और शासन के बीच के silos को तोड़ता है, उन्हें एक 360-डिग्री शहरी प्रणाली में पुनर्संयोजित करता है।

5. अन्य भारतीय राज्यों के लिए सबक

केयूपीसी एक प्रतिकृति योग्य टेम्पलेट प्रदान करता है:

1. **एक समय-बद्ध आयोग का गठन करें:** एक समर्पित, समय-बद्ध राज्य-स्तरीय आयोग की स्थापना करें।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

2. **डेटा को जीवंत अनुभव के साथ मिलाएं:** तकनीकी डेटा को "संवादात्मक प्रणालियों" में सामुदायिक बुद्धिमत्ता के साथ जोड़ें।
3. **स्थानीय निकायों को वित्तीय रूप से सशक्त बनाएं:** नगरपालिका बॉन्ड, पूल्ड बॉन्ड और हरित लेवी जैसे उपकरणों का उपयोग करें।
4. **नई प्रतिभा को शामिल करें:** शहरी शासन संरचनाओं में युवाओं और विशेषज्ञों को एकीकृत करें।

6. निष्कर्ष: महत्व

केयूपीसी रिपोर्ट केवल एक योजना से अधिक है; यह इस बात का एक मौलिक rewiring है कि कोई राज्य शहरी विकास की कल्पना कैसे करता है। यह जलवायु जागरूकता, सामुदायिक कथा, वित्तीय सशक्तिकरण और डिजिटल शासन को एक एकल, कार्रवाई योग्य ढांचे में एकीकृत करता है, जो भारत के बाकी हिस्सों के लिए एक मिसाल कायम करता है।

5. राज्यपालों को सच्चे मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में कार्य करना चाहिए: CJI गवई

मुख्य बिंदु

1. **राज्यपाल मार्गदर्शक के रूप में:** CJI गवई ने जोर देकर कहा कि राज्यपालों को राज्य सरकारों के प्रति "सच्चे मार्गदर्शक और दार्शनिक" के रूप में कार्य करना चाहिए, न कि प्रतिद्वंद्वियों की तरह।
2. **लंबित विधेयक मुद्दा:** कई राज्यों ने शिकायत की कि राज्यपाल विधेयकों पर अनुमति देने में अनिश्चित काल तक देरी कर रहे हैं, जिससे विधायी अधिकार कमजोर हो रहा है।
3. **द्वैध शासन का जोखिम:** राज्यपालों को विस्तृत विवेकाधीन शक्तियाँ देना एक समानांतर प्राधिकार बना सकता है, जिससे संसदीय लोकतंत्र कमजोर होगा।
4. **समयसीमा की आवश्यकता:** सर्वोच्च न्यायालय ने संवैधानिक गतिरोध को रोकने के लिए विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए राज्यपालों के लिए विशिष्ट समयसीमा (3-6 महीने) की आवश्यकता पर जोर दिया।
5. **संघीय संतुलन:** यह मामला केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव और सहकारी संघवाद के महत्व को उजागर करता है, साथ ही राज्यपाल के पद के दुरुपयोग को रोकता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"